

② संयुक्त वाक्य -

जब दो या दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य

किसी संयोजक से जुड़े हों, कोई किसी पर आश्रित नहीं हो, संयुक्त वाक्य कहलाता है।

जैसे -

मोहन पत्र लिखता है और मोहिनी अखबार पढ़ती है।

↓
स्वतंत्र उपवाक्य

↓
संयोजक

↓
स्वतंत्र/समानाधिकरण उपवाक्य

कृष्ण बॉसूरी बजाता है और राधा गाना गाती है तथा जोले गाय चराने हैं

स्वतंत्र उपवाक्य संयोजक स्वतंत्र उपवाक्य संयोजक स्वतंत्र उपवाक्य

हवा का तीव्र झोंका आया और वह सबकुछ उड़ा ले गया।

स्वतंत्र उपवाक्य संयोजक स्वतंत्र उपवाक्य

रजनी बीमार है इसलिए वह विद्यालय नहीं गई।

स्वतंत्र उपवाक्य संयोजक स्वतंत्र उपवाक्य

पिताजी स्टेशन पहुँचै और गाड़ी धूल गई।

↓
स्वतंत्र उपवाच्य

↓
संयोजक

↓
स्वतंत्र/समानाधिकरण उपवाच्य

रोगी ने दवा पी लेकिन उसे उल्टी हो गई।

↓
स्वतंत्र उपवाच्य

↓
संयोजक

↓
स्वतंत्र/समानाधिकरण उपवाच्य

महेश विद्यालय पहुँचा और घंटी बज गई।

↓
स्वतंत्र उपवाच्य

↓
संयोजक

↓
स्वतंत्र/समानाधिकरण उपवाच्य

③ मिश्र/मिश्रित वाक्य-

जब किसी वाक्य में एक प्रधान

उपवाक्य और एक या एक से अधिक आश्रित
उपवाक्य हों, तो उसे मिश्र या मिश्रित वाक्य कहते हैं।

जैसे- हवा का तीव्र झोंका ऐसा आया कि वह सबकुछ उड़ा ले गया।
गांधीजी ने कहा कि सदा सत्य बोलो।

रजनी इसलिए विद्यालय नहीं गई क्योंकि वह बहुत बीमार थी।
जैसे ही मोहन विद्यालय पहुँचा वैसे ही घंटी बज गई।
जो पढ़ेगा वह पास होगा। यद्यपि वह गरीब है तथापि बैरमान नहीं।
जैसे ही रोजी ने दवा ली वैसे ही उसे उल्टी हो गई।
जो विद्वान होता है वह सभी जगह आदर पाता है।

मोदी जी ने देशवासियों से कहा कि घर में ही रहें अन्यथा

↓
प्रधान उपवाक्य

↓
आश्रित उपवाक्य
कोरोना और अधिक फैल जा रहा

कौड़ी आपकी मदद करे या ना करे, मैं करूंगा।

↓
आश्रित उपवाक्य

↓
प्रधान उपवाक्य